International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 32-33

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 32-33
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-01-2017
Accepted: 14-02-2017

Pooja Saini
Department of Sanskrit, Hindu Girls College, Sonepat, Haryana, India

Correspondence
Pooja Saini
Department of Sanskrit, Hindu Girls College, Sonepat, Haryana, India

होलिका महत्व विभिन्न मतानुसार

Pooja Saini

प्रस्तावना

होली भारत का अत्यन्त प्राचीन पर्व है। होली शब्द होला शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है नई और अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए भगवान से प्रार्थना। इसे होली, होलिका या होलाका[1] नाम से जाना जाता है। होली का त्यौहार कई पौराणिक गाथाओं से जुडा हुआ है। इनमें कामदेव प्रह्लाद और पूतना की कहानी, शिव और पार्वती की कहानी, प्रह्लाद और होलिका की कहानी प्रसिद्ध है। फाल्गुन की पूर्णिमा पर लोग एक दूसरे पर रंगीन जल छोड़ते हैं और सुगंधित चुर्ण बिखेरते है। वर्षकृत्य दीपक[2] ने एक श्लोक उद्भृत किया है। होलिका –पूर्णिमा को हुताशनी कहा गया है। लिंग पुराण में आया है– फाल्गुन पूर्णिमा को फाल्गुनिका कहा जाता है, यह बाल–क्रीडाओं से पूर्ण है और लोगों को विभूति, ऐश्वर्य देने वाली है। वराह पुराण में आया है कि यह पटवास–विलासिनी[3] है। कहानी पौराणिक हो, धार्मिक हो या फिर सामाजिक, सभी कहानियों से कुछ ना कुछ संदेश अवश्य मिलता है। प्रत्येक कहानी के अन्त में सत्य की ही जीत होती है और दुष्ट प्रवृतियों का अन्त होता है। इसलिए कथाओं में प्रतिकात्मक रुप से दिए गये संदेशों को अपने जीवन में ढालने का प्रयास करना चाहिए, इससे मानव मात्र को एक नई दिशा मिलती है।

होली पर्व का महत्व विभिन्न दृष्टिकोणों से–

ज्योतिष महत्व

होली की गणना ज्योतिष विद्या द्वारा ही सम्भव है। पूर्णिमा के दिन आकाश में चाँद पूरा दिखाई देता है। सूर्य एक जगह होता है, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्र लगाती है और चन्द्रमाँ पृथ्वी के आसपास घूमता है। चन्द्रमाँ स्वरुप में छोटा है इसलिए जब चन्द्रमाँ घूमते–घूमते पृथ्वी और सूर्य के मध्य में आता है तो 15 दिन पूरे खिले हुए होते है और फिर घूमता है तो अगले 15 दिन अन्धेरा होता है। सारी की सारी गणना चन्द्रमाँ से की जाती है क्योंकि चन्द्रमाँ मन से उत्पन्न हुआ है– चन्द्रमा मनसो जातः[4]। हमारे अन्दर जो मन है उसी को चन्द्रमाँ कहते है और मन की स्थिति को संतुष्ट रखने के लिए ही सारे त्यौहार मनाये जाते है। इसलिए सारा कुछ पूर्णिमा और अमावस्या के आस–पास होता है।

होली के दिन का आरम्भ होलाष्टक से होता है। फाल्गुनी अष्टमी से आरम्भ करके पूर्णिमा के दिन होलिका दहन करके समाप्त किया जाता है। इसी दिन से वसन्त ऋतु का आगमन हो जाता है।

होलिकादहन के अगले दिन धुलंडी होती है जो कि विकृति रुप है धुलिवदन का। धुलिवदन अर्थात् धुलि+वदन (धूल+मुख) मुख पर धूल अर्थात् रंग लगाना। कई प्रान्तों में इन दिनों कोई भी शुभ काम नही किये जाते। होलाष्टक से पहले दिन एक निश्चित स्थान पर लकडी का खम्बा गाड दिया जाता है। इसे मनुष्य का स्थूल शरीर माना गया है। शेष सात दिन छोटे–छोटे एक– एक रंग के कपडे या फिर धागे बाँधे जाते है और पूजा की जाती है। ये सूर्य की सात रश्मि है। मुख्य रंग एक सफेद ही होता है प्रिज्म में आने के कारण ये सात दिखाई देते है।

पूणिमा के दिन होलिका दहन किया जाता है। दहन के समय होलिका की गोद में प्रह्लाद को जलाने के लिए बैठाया जाता है लेकिन प्रह्लाद का बच जाना यह इंगित करता है कि मनुष्य का स्थूल शरीर नश्वर है, मात्र सत्त्व कर्म ही शेष रह जाते है जो कि प्रह्लाद है। प्रह्लाद प्र पूर्वक आह्लद शब्द से बना है जिसका अर्थ है प्रकृष्ट रुप से प्रसन्न अर्थात् अनन्तः प्रसन्न होना। अतः जो आपको अनन्तः प्रसन्न रखता है वो आपके धर्म और कर्म है।

होली खगोलीय घटना है। प्रह्लाद –विष्णु– हिरण्यकश्यप ये सब पौराणिक नाम है। भागवत सम्प्रदाय के अनुसार श्याम वर्ण –कृष्ण, गौर वर्ण –राधा और आसुरि शक्ति पूतना बन जाती है। शैव सम्प्रदाय अनुसार– रति और कामदेव।

खगोलीय घटना को संस्कृति का जामा पहनाकर इस तरह वर्णित (व्याख्यायित) किया जाता है कि प्रत्येक मनुष्य जीवन स्मृत रख सकें। इसलिए अनेक रंग, नाना विद्ध व्यंजन, अनेक रस, नाचना–गाना–बजाना अर्थात् अपनी मनोवृतियों का मिश्रित रुप बिना भेद–भाव प्रदर्शित करना चाहिए क्योंकि स्थूल शरीर तो नश्वर है और धर्म सत्त्व अनुगच्छति अर्थात् धर्म और सत्त्व कर्म ही आन्तरिक खुशी को प्रकट करते है।

वैज्ञानिक महत्व

सर्वप्रथम तो वैज्ञानिको का मनाना है कि हमें अपने शास्त्रों और पूर्वजों का शुक्रगुजार होना चाहिए कि उन्होंने उचित समय पर होली का त्यौहार मनाना आरम्भ किया। होलिका दहन के लिए वैज्ञानिकों का मानना है कि इस दौरान अर्थात् फाल्गुन मास का अन्तिम चरण और वसन्त का प्रारम्भ होने से मौसम में परिवर्तन होता है तो वातावरण में अनेक प्रकार के हानिकारक जीवाणु उत्पन्न हो जाते है। जो हमारे शरीर के लिए घातक होते है। इसलिए वैज्ञानिकों का मानना है कि जब प्रातः काल होली पूजन किया जाता है जो उसमें शुद्ध सामग्री अर्पित की जाती है ताकि होलिका दहन के समय वो वातावरण को शुद्ध और स्वच्छ कर सकें। होलिका दहन के समय परिक्रमा लगाने के पीछे वैज्ञानिकों का मानना है कि रात्रि में होलिका दहन के समय जब इस वातावरण में परिक्रमा लगाते है तो उस तापमान (जलती हुई लपटों) से जीवाणु मर जाते है और शरीर भी स्वच्छ हो जाता है। जीव वैज्ञानिकों का मानना है कि होलिका दहन के बाद इस बुझी हुई राख को माथे पर विभूति के तौर पर लगाते है और अच्छे स्वास्थ्य के लिए वे चंदन तथा हरी कोंपलों और आम के बोर को मिलाकर उसका सेवन करते हैं।

गुलाल या अबीर शरीर के आयन मंडल को मजबूती प्रदान करने के साथ ही स्वास्थ्य को बेहतर करते हैं और उसकी सुन्दरता में निखार लाते हैं। रंगों से खेलने पर स्वास्थ्य पर इनका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि रंग हमारे शरीर तथा स्वास्थ्य को अनेकों प्रकार से प्रभावित करते है। पश्चिमी फीजिशियन और डॉक्टरों को मानना है कि एक स्वस्थ शरीर में रंगों का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे शरीर में किसी रंग विशेष की कमी भी अनेक बिमारियों को जन्म देती है और जिनका ईलाज केवल उस रंग की आपूर्ति करके ही किया जाता है।

होले के अवसर पर घरों में साफ–सफाई सुखद अहसास देने के साथ ही सकारात्मक ऊर्जा भी प्रभावित करता है। इस मौसम में बजाया जाना वाला संगीत तेज हो तो मानवीय शरीर को नई ऊर्जा प्रदान करता है।

सामाजिक महत्व

होली का त्यौहार सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। यह समाज में रहने वाले लोगों के लिए बहुत खुशी लाता है। यह त्यौहार दुश्मनों को आजीवन दोस्तों के रूप में बदलता है साथ ही उम्र, जाति और धर्म के सभी भेदभाव को हटा देता है। एक–दूसरे पर कीचड़ भी फेंकते है।[5] इस प्रकार होली भाईचारे, आपसी प्रेम एवं सद्भावना का त्यौहार है जो संदेश देता है कि हमें बुराइयों को त्यागकर, आपसी शत्रुता एवं वैमनस्य को भूलाकर नए विचारों के साथ भविष्य में अग्रसर होना चाहिए। होली रंगों, आनंद और उल्लास का त्यौहार है। बॉलीवुड के होली गीत आनंद और उल्लास से भरे है– होली आई रे कन्हाई, [6] होली के दिन, [7] होली खेलें रघुवीरा [8] इत्यादि होली के कुछ लोकप्रिय गीत है। यह त्यौहार संबंधों को पुनः जीवित करने और मजबूती के टॉनिक के रूप में कार्य करता है, जो एक दूसरे को महान भावनात्मक बंधन में बांधता है।

इस प्रकार होली शास्त्रों में वर्णित वसुधैव कुटुंबकम् [9] की भावना को प्रतिपादित करती है। होली यह संदेश देती है कि यदि मनुष्य उसके भीतर स्थित होलिका के रुप में विद्यमान काम, क्रोध, मद, मोह एवं लोभ कि भावनाओं पर नियंत्रण रखकर ईश्वर द्वारा बनाए इस संसार में उसके बनाए नियमों का पालन करते हुए अपना जीवनयापन करते हैं तो सदैव ईश्वर की कृपा के पात्र बनते हैं।

संदर्भित ग्रन्थ

1. आप्टे, वामन शिवराम संस्कृत हिन्दीकोश, दिल्ली, पटना, वाराणसी भारतः मोतीलाल बनारसीदास
2. वर्षकृत्यदीपक में– सिन्दरैः कुंकुमैश्चैव धूलिभिर्धूसरो भवेत्।
   गीतं वाद्यं च नृत्यं च कृर्याद्रथ्योपसर्पणम
3. वराहपुराणे– फाल्गुने पौर्णिमास्यां तु पटवासविलासनी।
   ज्ञेया सा फाल्गुनी लोके कार्या लोकसमृद्धये।।
4. ऋग्वेद– पुरुष सूक्त मंत्र संख्या–13
5. वर्षकृत्यदीपक में –प्रभाते बिमले जाते ह्यंगे भस्म च कारयेत्।
   सर्वागे च ललाटे च क्रीडितव्यं पिशाचवत्।।
6. फिल्म –मदर इंडिया
7. फिल्म –शोले
8. फिल्म –बागवान
9. हितोपदेश